

---

# Shri Vyasa Stuti 2 or Shri Vasishtha Krishna Ashtakam

---

श्रीव्यासस्तुतिः २ अथवा श्रीवासिष्ठकृष्णाष्टकम्

---

## Document Information

---



---

Text title : Shri Vyasa Stuti 2 or Shri Vasishtha Krishna Ashtakam

File name : vyAsastutiH2.itx

Category : deities\_misc, gurudev, vAdirAja, aShTaka

Location : doc\_deities\_misc

Author : Vadiraja

Transliterated by : Krishnananda Achar

Proofread by : Krishnananda Achar

Latest update : August 28, 2021

Send corrections to : [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 29, 2021

*sanskritdocuments.org*

---



श्रीव्यासस्तुतिः २ अथवा श्रीवासिष्ठकृष्णाष्टकम्



श्रीशं विचित्रकवितारसपूरिताशं  
श्रीशङ्कुरोरग भगेन्द्रं हृदयवासम् ।  
आशङ्कमानं जनतृमिकरोऽतिडासं  
व्यासं नतोऽस्मि हरितोपलसन्निकाशम् ॥ १ ॥

वेदान्तसूत्रं पवनोद्भूतं पञ्चवेदा  
मोदांशतोषितं सुरर्षिनरादिभेदात् ।  
भोधाभ्युजातं लसितां सरसीमगाधां  
श्रीदां शितोऽस्मि शुक्तातपदाभ्येदात् ॥ २ ॥

द्वैपायनो जयति यन्निजशक्तिदीपः  
पापाभिवर्धितं कुवादितमिस्रतापः ।  
पापाभ्यर्द्धुर्भगदशाङ्गति तीव्रकोपः  
पापाद्भूतौषधिरग्रे श्वसनांशरूपः ॥ ३ ॥

छन्द्रादिदैवतं हृदाभ्यं यकोरयन्द्रा  
मन्दाशु कल्पशुभं जल्पितं पुष्यवृन्दः ।  
वृन्दारकाङ्क्ष्युपलता गुणरत्नसान्द्रो  
मन्दाय मे कृतं कृष्णतरुः कुलं द्राक् ॥ ४ ॥

माताहितेव परिरक्षतियेन गीता  
गीतायं भारतं पुराणकृताविगीता ।  
वातांशं मध्यवरदः सागिरो भूमैताः  
भ्याता पराशरसुतो विदधातु धाता ॥ ५ ॥

पारं भवाभ्यजलघेर्भुवनैकसारं  
स्वैरं कृतोरुविधं वेदं पथं प्रथारम् ।  
आरञ्जितामरजं सुषुप्तिश्चरीरं  
धीरं स्मरामि हृदि सत्यवतीकुमारम् ॥ ६ ॥

भावाश्रितं यमनुसृत्य भजन्ति देवाः

सेवारताश्च मुनयः कवयोऽनृष्टेवाः ।

यो वासुदेव वपुस्त्वय मडानुभावां

स्त्रिभादरायण उरेर्न गृणीत कोवा ॥ ७ ॥

ज्ञानं प्रदेहि भवदागमवार्ध्वधीनं

श्रीनन्दसूनु पदभक्ति नदीनिदानम् ।

आनन्दतीर्थवरदोष्य मडाध्वनीनं

दीनं बहर्थाधिपते कुरु माममानम् ॥ ८ ॥

वासिष्ठवंशतिलकस्य उरेर्मनोज्ञं

दोषौघम्पडनविशारदमष्टकं ये ।


दासाः पठन्त्यनुदिनं भुवि वाटिराज

धीसम्भवं परिभवो न दिशाशु तेषाम् ॥ ९ ॥


इति श्रीवाटिराजयतिविरचिता व्यासस्तुतिः समाप्ता ।

Encoded and proofread by Krishnananda Achar

---

——  
*Shri Vyasa Stuti 2 or Shri Vasishtha Krishna Ashtakam*

pdf was typeset on August 29, 2021

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

